IJAER/March-April- 2020/Volume-8/Issue-5/Article No-1/ 1-7 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

माध्यमिक विद्यालयों के मनोसामाजिक पर्यावरण तथा भौतिक उपलब्धि में सम्बंध का अध्ययन

ज्योति
शोधार्थी
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
झुंनझुंनु,राजस्थान

डॉ. शिवकान्त शर्मा
शोध निर्देशक
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
झुंनझुंनु,राजस्थान

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया था जिसकी समष्टि गाजियाबाद जनपद से कक्षा 11 के विद्यार्थी थे। विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर आधा–आधा रखते हुये 600 विद्यार्थियों को याद्च्छिक रुप से चयनित करके किया गया था। आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण मनोसामाजिक वातावरण मापनी द्वारा किया गया था तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिये कक्षा –10 के प्राप्तांक को आधार माना गया। इसकी सांख्यकी तकनीकि 2 x 2 x 2 प्रसरण विश्लेषण थी। प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम था कि उच्च व निम्न मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर होता है और छात्राएं अधिक प्रभावित होती हैं।
मुख्य शब्द : याद्च्छिक, समष्टि, न्यादर्श, मनोसामाजिक पर्यावरण, गाजियाबाद जनपद के विद्यालय शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

मानव समाज का इतिहास परिवार का ही इतिहास है क्योंकि मानव जीवन के प्रारंभ से ही परिवार का अस्तित्व है परिवार समाज की आधारभूत इकाई है । एक अच्छा परिवार समाज के लिये वरदान और एक बुरा परिवार समाज के लिये अभिशाप होता है। क्योंकि समाज में परिवार की भूमिका प्रदायक की होती है। परिवार सदस्यों का समाजीकरण करता है, साथ ही सामाजिक नियंत्रण का कार्य करता है क्योंकि सभी नातेदार सम्बन्धों की मर्यादा से बंधे होते हैं । एक अच्छे परिवार में अनुशासन और आजादी दोनों होती हैं। परिवार के सभी बालक जन्म के समय एक समान होते है उनमें धर्म जाति, आर्थिक आदि रुप से कोई अन्तर नहीं होता परन्तु जन्म के पश्चात् बालक के सम्पूर्ण विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिकाएँ होती हैं। बालकों के विचार–व्यवहार एवं गुण उसके परिवार के अनुसार ही प्रतिबिम्ति होते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बच्चों के विकास में आनुवंशिकी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं परन्तु इससे परिवार के वातावरण की महत्ता कम नहीं होती। परिवार को बच्चों की प्रथम पाठशाला के रुप में स्वीकार किया गया हैं इसलिए परिवार को गच्चों के सम्पूर्ण विकास की प्रथम सीढ़ी माना जाता है क्योंकि उसी के अनुसार बच्चों का सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है।

सिंह (2005) के अनुसार– बच्चे सबसे पहले और सबसे अधिक अपने परिवार के सम्पर्क में रहते हैं अतः बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए परिवार ही सम्पूर्ण रुप से उत्तरदायी है। परिवार को चाहिए कि बच्चों के बारे में सोचें उसे परिवार के लिए जीविका कमाने की जिम्मेदारी न सौपें, उसे गरीब और निरक्षर परिवार में जन्म लेने की सजा न दें। उसकी आजादी का गला अविकास और गरीबी की रस्सी से घोंटने की कोशिश न करें उसमें उसका कोई कसूर नहीं हैं पुरातन काल से ही भारतीय समाज में परिवार को उच्च श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। उसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा गया है क्योंकि जिन बच्चों के विकास में अच्छे परिवार का प्रभाव पड़ता है वे बच्चे कल भविष्य में राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं। इस प्रकार परिवार के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है।'' व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता घर से पैदा होती है यदि गृह न होता, तो हम क्या होते? कुछ नहीं कहा जा सकता। परिवार को यदि संक्षिप्त रुप में परिभाषित करें तो कह सकते है कि– ''परिवार एक या एक से अधिक दम्पत्तियों एवं उनसे उत्पन्न बच्चों का वह सामाजिक समूह है जिसके सभी सदस्य एक स्थान पर रहकर संयुक्त उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं एवं अपना जीवन चलाते हैं। विद्यालय समाज का मस्तिष्क है। विद्यालय ऐसी संस्था है, जिनको मानव ने इस उद्देश्य से स्थापित किया है कि समाज में

ऐसे योग्य सदस्य तैयार करने में मदद मिले जो समाज को विकसित कर सके। समाज तथा राष्ट्र के विकास में विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ बालकों के सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, नैतिक एवं भावनात्मक विकास की आधारशिला, जो परिवार द्वारा रखी जाती है, उसका परिष्कार होता है। विद्यालय केवल भवन नहीं है, जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षा देने का कार्य करता है, बल्कि विद्यालय ज्ञान, कला, विज्ञान व संस्कृति का गतिशील केन्द्र है जो बालकों में जीवन शक्ति का संचार करता है। सुसंचालित विद्यालय एक पवित्र मंदिर है, जो बालक के व्यक्तित्व को संतुलित बनाता है तथा उसकी जन्मजात शक्तियों के प्रस्फुटन के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आस–पास के वातावरण से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित होता है। विद्यालयीय वातावरण भी इसका अपवाद नहीं है। विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण बालकों पर अपना प्रभाव डालता है विद्यालय भवन, विद्यालय का व्यवहार और दृष्टिकोण, अध्ययन के उपकरण, पुस्कालय, प्रयोगशाला आदि बालकों को शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने में सहायक होते हैं। विद्यालय भवन में व्याप्त अस्वच्छता, अवस्तरीय पुस्तकें, बड़ी कक्षाएं, प्रभावहीन अध्ययन विधियाँ, आतातायी अनुशासन, विषयों के चुनाव में मार्गदर्शन का अभाव, शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

बालक में जिज्ञासा, स्वतंत्र चिन्तन, समस्या समाधान की योग्यता के विकास के लिए योजकता, स्वाध्याय क्रिया आधारित अनुभूति ज्ञान, श्रम निष्ठा, सत्यान्वेषण, वैज्ञानिक दृष्टि आदि का होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब विद्यार्थियों को उत्तम विद्यालयीय वातावरण में शिक्षा दी जाये। विद्यालय एक सुधार केन्द्र है, जहाँ छात्र गरिमामय जीवन कला में प्रशिक्षण प्राप्त करता है। आर्थिक, सांस्कृतिक और संवेगीक रुप से वंचीत बच्चों के अभाव की पूर्ति का प्रयास विद्यालय को सजग रहकर अपने कार्यक्रम में तद्नुरुप परिवर्तन करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। किसी भी संस्था या संगठन की सफलता उसकी प्रशासन प्रक्रिया पर आधारित होती है। अध्यापकों की योग्यता के अनुसार कार्य का विभाजन तथा उपलब्ध शैक्षिक सहायक सामग्री का समन्वित उपयोग करना शैक्षिक प्रशासन का महत्वपूर्ण कार्य है विद्यालय संगठन के विभिन्न घटकों के बीच समन्वय का कार्य प्रशासन द्वारा किया जाता है। विद्यालय घटकों के बीच समन्वय अर्थात् उत्तम प्रशासन उपयुक्त विद्यालयीय वातावरण के निर्माण में सहायक होता है। अतः विद्यालय की प्रशासन पद्धति इस प्रकार होनी चाहिए कि विद्यालय का वातावरण अनुकूल बना रहे। उपलब्ध मानव तथा भौतिक संसाधन का समुचित उपयोग इस तरह से हो कि विद्यालय अपने स्थापना के मूल उद्देश्य बालकों के सर्वागीण विकास को मूर्त रुप देने में सफल हो सके। शैक्षिक प्रशासन का कार्य अत्यन्त जटिल तथा महत्वपूर्ण होता है। इस कार्य को शीघ्रता से करना सम्पूर्ण प्रशासन के महत्वपूर्ण अंग योजना, संगठन, नियुक्तिकरण, निर्देशन समन्वय, विज्ञप्ति लेखन, बजट निर्माण आदि पर ध्यानपूर्वक विचार कर लिया जाये तो शैक्षिक प्रशासन पद्धति से शिक्षकों एवं छात्रों तथा अन्य कर्मचारियों के पारस्परिक सम्बन्ध मधुर बनते हैं जिससे विद्यालयीय वातावरण मनोसामाजिक स्तर पर शान्त एवं सुखद रहता है।

मनोसामाजिक विद्यालयीय पर्यावरण

मनोसामाजिक विद्यालयीय पर्यावरण में वे सभी प्रभाव आ जाते हैं जो विद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। इसके अर्न्तगत कक्षा का आकार बैठने की व्यवस्था, सहायक सामग्री का प्रयोग, शिक्षण विधि, प्राचार्य– शिक्षक सम्बन्ध, छात्रों को प्राप्त होने वाली संवेगात्मक प्रेरणा, शिक्षक छात्र सम्बन्ध आदि आते हैं। मनोसामाजिक विद्यालयीय पर्यावरण संस्था प्रमुख तथा अध्यापक, अध्यापक तथा अध्यापक, छात्र तथा अध्यापक व छात्रों के अन्य सहयोगियों के बीच सम्बन्धों तथा उनके मध्य होने वाली अंतःक्रिया की उपज है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मनोसामाजिक विद्यालयीय पर्यावरण में वे सभी प्रभाव आ जाते है जो विद्यालय के प्राचार्य, अध्यापकों एवं अन्य सहयोगियों द्वारा विद्यार्थियों पर अंकित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने आस–पास के वातावरण से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित होता है, विद्यालयीन वातावरण भी इसका अपवाद नहीं है। विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण बालकों पर अपना प्रभाव डालता है। विद्यालय भवन, विद्यालय का व्यवहार और दृष्किोण, अध्ययन के उपकरण, पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि बालकों को शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने में सहायक होता है। विद्यालय भवन में व्याप्त अस्वच्छता और अवस्तरीय पुस्तकें, बड़ी कक्षाएं, प्रभावहीन अध्ययन विधियाँ, आततायी अनुशासन, विषयों के चुनाव में मार्गदर्शन का अभाव, शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रभावित करना है। बालक में जिज्ञासा, स्वतन्त्र चिन्तन समस्या समाधान की योग्यता के विकास के लिये योजकता, स्वाध्याय क्रिया आधारित अनुभूति ज्ञान, श्रमनिष्ठा, सत्यान्वेषण, वैज्ञानिक दृष्टि आदि का होना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब विद्यार्थियों को उत्तम विद्यालयीय वातावरण में शिक्षा दी जाये।

भौतिक प्रशासन पद्धतिः

निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मानव भौतिक संसाधन की व्यवस्था करना तथा निर्देश देना ही प्रशासन है। प्रशासनिक व्यवस्था के अर्न्तगत वे सभी क्रियाएं आ जाती हैं जो सामान्य नियमों की पूर्ति के लिए सम्पन्न किये जाते हैं। प्रशासन की प्रक्रिया में योजना, व्यवस्था, निर्देशन, समन्वय नियंत्रण तथा मूल्यांकन आवश्यक तत्व है। शैक्षिक प्रशासन का सम्बन्ध शैक्षिक संस्थाओं के प्रशासन से होता है। कक्षा भवन, पुस्तकालय, क्रीड़ास्थल, कार्यालय अध्यापन व्यवस्था, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सफलतापूर्वक संयोजन करना, पर्यवेक्षण, संस्था के सभी व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों को मधुर बनाना, कार्यक्षमता को उचित प्रोत्साहन व प्रेरणा देना तथा सहयोगपूर्ण ढंग से कार्य करना की शैक्षिक प्रशासन का कार्य है। शैक्षिक प्रशासन पद्धति से तात्पर्य शैक्षणिक कार्य की गुणवत्ता को बनाने के लिए मनुष्यों तथा सामग्रीयों की उचित व्यवस्था करने की विधि से है।

भौतिक उपलब्धिः

शिक्षा विकास की प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का सर्वा ंगीण विकास किया जाता है। जिससे वह अपने पर्यावरण में समायोजन कर अर्थपूर्ण जीवनयापन कर सके। विभिन्न पक्षों के विकास से व्यक्ति जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करता है जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह एक योग्य नागरिक बनता है। शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रा से है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्र अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्र अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास करते हैं। छात्रों की बौद्धिक योग्यताओं का विकास किस सीमा तक हुआ है यही उनकी उपलब्धि का सूचक है। शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। उपलब्धि परीक्षण किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को कहते है ं। फ्रीमैन के अनुसार–''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह है जिसे किसी विशेष विषय या विषयों के समूह में ज्ञान, बोध या कौशलों के मापन के लिए बनाया गया हो।''थार्नडाइक व हेगन (1955) के अनुसार "जब हम शैक्षिक उपलब्धि शब्द का प्रयोग करते है तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि एक निश्चित प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति ने क्या सीखा है।"हम प्रायः शैक्षिक उपलब्धि को किसी एक विषय में या विभिन्न विषयों में प्राप्त अंकों के रूप में लेते हैं। विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों या किसी एक विषय मे प्राप्त अंक उसकी उस विषय या विषयों में ज्ञान तथा योग्यताओं को प्रदर्शित करते है अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि एक विषय या विषयों में अर्जित क्षमताएँ (ज्ञान तथा योग्यताएँ) होती है। विद्यार्थी विभिन्न विषयों में इन क्षमताओं को कैसे अर्जित करते है ं? इस प्रश्न का उत्तर है विद्यार्थी द्वारा अपनी स्मृति में निर्मित ज्ञान संरचना से। ज्ञान–संरचनाबाह्य वास्तविकताओं का आंतरिक निरूपण है।उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी एकपक्षी (बाह्य संरचना) की ज्ञान संरचना को आकार, पंख, उड़ना, घोसले या पेडों की शाखाओं में रहते (आंतरिक निरूपण) के रूप में निर्माण करता है। ज्ञान–संरचना मे ंपक्षी के विभिन्न प्रकार, विशेषताओं जैव वैज्ञानिक प्रक्रियाओं जीवन क्रिया के बारे मे ंसंरचना आती है

पुनरावलोकनः

अडवाल एण्ड कक्कर (1961) अपने–अपने अध्ययन में पाया कि– ''जिन विद्यार्थियों के घर का वातावरण अप्रिय (आनन्द न देने वाला), झगड़ालू प्रवृत्ति के होते हैं उनके शैक्षिक उपलब्धि इन वातावरणों से प्रभावित होते है ं।'' मिश्रा, के. एस. (1982) ने बच्चों द्वारा गृह तथा विद्यालय पर्यावरण के प्रत्यक्षीकरण तथा उसका बच्चों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जिसका परिणाम वैज्ञानिक सृजनात्मकता तथा प्रभाव लचीलेपन और मौलिकतापन में लड़कियाँ लड़कों से अधिक पायी गयी। उच्च वैज्ञानिक सृजनात्मकता वाली लड़कियाँ, निम्न वैज्ञानिक सृजनात्मकता वाली लड़कियों से घर पर सृजनात्मकता के उद्दीपन को अधिक प्राप्त थी। सक्सेना, ए.बी. (1983) ने कुछ चिन्हित विद्यालयी अधिगम परिवेश पक्षों, विद्यार्थियों की विशेषताओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जिसका परिणाम विद्यार्थियों की विशेषताओं के विकास पर पाठ्येत्तर क्रियाओं में सहभागिता, शैक्षिक संकायों का पर्यावरण, लोकतांत्रिक परिवेश, सन्तोषजनक प्रतियोगिता आदि का पर्याप्त प्रभाव पाया गया। भार्गव (1986) ''स्कूल एवं गृह पर्यावरण के द्वारा बच्चों में स्थूल और वाह्याडम्बर पूर्ण क्रियात्मक स्थितियों में युक्त नैतिक दृष्टि को पूर्ण क्रियात्मक स्थितियों से युक्त नैतिक दृष्टि का विकास होता है। जिसके परिणाम गृह पर्यावरण में व्यक्तित्व उस अवस्था के नैतिक दृष्टि पर भी धनात्मक अंक व्यक्त कर रहा था। जिसमें माता–पिता के स्वीकृत को नजर अन्दाज किया गया था। उपमन्यु, के. (1991) ने अपने अध्ययन मे ं पाया कि कामकाजी महिलाएँ घरेलू महिलाओं की अपेक्षा कम चिन्तन करती हैं तथा कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा घरेलू महिलाओं में तनाव ज्यादा रहता है। आर. एस. दुआ (1991) इनका अध्ययन था– ''कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं

के समायोजन स्तर में अन्तर का अध्ययन किये जिसका परिणाम कामकाजी महिलाएँ घरेलू महिलाओं की अपेक्षा सांवेगिक समायोजन सामाजिक उत्तरदायित्व, बाहरी कार्य तथा घर की व्यवस्था और धर्म के प्रति दृष्टिकोण, शिक्षा, परिवार नियोजन, वैवाहिक स्वतन्त्रता आदि में घरेलू महिलाओं की अपेक्षा ज्यादा मूल्य रखती है। सिंह, सुनील (2002) ने 'विद्यालयी पर्यावरण तथा अधिगम' अध्ययन में परिणाम पाया था कि विद्यालय के पर्यावरण तथा सीखने को प्रभावित करने वाले कारकों के बीच धनात्मक सहसम्बंध होता है। यादव, शंकर (2008) ने 'सामाजिक परिवेश व विद्यालयी परिवेश में सम्बंध पर अपना कार्य किया तथा परिणाम पाया कि उनके बीच धनात्मक सहसम्बंध होता है। सिंघानिया (2010) ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष पाया कि बच्चा जब घर से निकलकर विद्यालय आता है तो विद्यालय के सभी आयामों पर अपने घर के सभी कारकों की तुलना करता है यहाँ तक कि अध्यापक के व्यवहार को माता– पिता के व्यवहार से सम्बंध करके देखता है जिससे उसमें समायोजन करने का गुण विकसित हो जाता है। दीपशिखा (2012) ने परिणाम पाया कि मनोसामाजिक पर्यावरण शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। यादव, (2016) ने परिणाम पाया कि शैक्षिक उपलब्धि व विद्यालयी पर्यावरण परस्पर घनिष्ट रुप से जुड़े होते है ।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य था कि ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मनोसामाजिक पर्यावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।''

परिकल्पनाः

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया था।
''माध्यमिक स्तर पर उच्च तथा निम्न मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण की छात्र व छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है ।''

शोध अभिकल्पः

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षणात्मक प्रकार का अनुसंधान है जिसमें वाराणसी जनपद के कक्षा–11 की समष्टि से कुल 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया था। सांख्यकीय तकनीकि 2x2x2 प्रसरण विश्लेषण की गणना की गयी थी।

मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण मापनीः

इस शोध में विद्यार्थियों के मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण के परीक्षण के लिए डॉ. के. एस. मिश्र द्वारा निर्मित 'विद्यालयी वातावरण अनुसूची' के हिन्दी रुपान्तरण का प्रयोग करके आँकड़े एकत्र किये गये है । शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए विद्यार्थियों के हाईस्कूल के प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है। इन परीक्षणों को विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों से भरवाकर इनका मूल्यांकन किया गया है। विद्यालय का मनोसामाजिक पर्यावरण का निर्माण शिक्षक व छात्रों के आपसी सम्बंधों से निर्मित होता है। इन सम्बंधों को छः विमाओं के तहत देखा जा सकता है, जिसमें छात्रों को सृजनात्मक प्रोत्साहन देना, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन देना जिससे उनका ज्ञान बढ़े, अनुमोदन प्रदान करना जिससे बालक स्वतंत्र रुप से कार्य करने को प्रेरित होते हैं, उनके विचारों तथा अनुभवों को स्वीकृति देना, अस्वीकृति प्रदान करना जिसके द्वारा उनके हर कार्य से अध्यापक सहमति नहीं देता है तथा विद्यालय में उनको अनुशासित करने के लिए नियंत्रित लगाना शामिल है। इन्हीं छः क्षेत्रों से एक विद्यालय का मनोसामाजिक पर्यावरण निर्मित होता है। इसलिए अनुसंधान कार्य के लिए डॉ. के. एस. मिश्र द्वारा निर्मित 'विद्यालयी वातावरण अनुसूची' उपयुक्त प्रतित हुई अतः इसका प्रयोग किया गया है। डॉ. के. एस. मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण अनुसूची में 70 पद है जो विद्यालय के मनोसामाजिक पर्यावरण को अभिव्यक्त करते हैं। इसमें मनोसामाजिक पर्यावरण से सम्बंधित 6 विमाओं से जुड़े हुए पद सम्मिलित है– सृजनात्मक प्रोत्साहन, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुमोदन अस्वीकृति, नियंत्रण। इस अनुसूची में 20 पद सृजनात्मक प्रोत्साहन से जुड़ा हुआ है तथा शेष पाँच विमाओं से जुड़े हुए 10–10 पद है। प्रत्येक कथन में उत्तर देने के लिए पाँच विकल्प है– बहुधा, प्रायः, कभी–कभी, बहुत कम, कभी नहीं।

परीक्षण की विश्वसनीयता तथा वैधताः

डॉ. करुणाशंकर मिश्र द्वारा निर्मित सूची (SEI) की स्पिलिट हॉफ विश्वसनीयता गुणांक 0.762–0.92 तक पायी गयी और वैधता गुणांक पाठ्य वस्तु के आधार पर मापी गयी है क्योंकि कोई सही अच्छा उपकरण वाह्य रुप से प्राप्त नहीं हो सका है।

Dimensions	Split half reliability coeffin
A- Creative stimulation	0-99
B- Cognitive encouragement	0-797
C- Acceptance	0-823
D- Permissive nets	0-675
D- Rejection	0-781
E- Control	0-762

SEI का प्रशासनः

इसका प्रयोग हिन्दी बोलने वाले माध्यमिक तथा हाईस्कूल शहरी तथा गाँव सभी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं पर किया जा सकता है। इसका प्रशासन व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों रुपों में किया जा सकता है। इसके नियम मुख्य पृष्ठ पर छापे होते हैं। मुख्य पृष्ठ पर ही विद्यार्थियों की सामान्य जानकारी के लिए कालम होता है। इसमें समय का कोई प्रतिबंध नहीं होता है न ही हर पद को पूरा करने का। जो भी उन्हें उचित लगता है उसी का वे उत्तर देते है। अंकनः इसका अंकन पाँच विकल्प मापन के आधार पर किया गया है। अंकन का तरीका कुँजी में दिया गया है। उसी के अनुसार गणना की गयी है। अंकन के लिए बहुधा पर 4 अंक, प्रायः पर 3 अंक, कभी–कभी पर, 2 अंक, बहुत कम पर 1 अंक तथा कभी नहीं पर 0 (शून्य) अंक दिया गया है।

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणः

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा पूरे सत्र के दौरान निर्धारित पाठ्यक्रम में अर्जित की गयी उपलब्धि से है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए आधार के रुप में कक्षा–10 में अर्जित प्राप्तांक ही विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक हैं।

विश्लेशण व व्याख्या

(उच्च व निम्न मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण) के शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधी प्रसरण विश्लेषण सम्बंधी तालिका

विचरण के स्रोत	स्वतंत्र संख्या	वर्ग योग	माध्य वर्ग योग	प्रसरण अनुपात	सार्थकता स्तर
मुख्यग प्रभाव					
		प्रथम अन्र्तक्रियात्मक प्रभाव			
प्रशासन x लिंग	1	1126.23	1126.23	2.30	.05
प्रशासन x पर्यावरण	1	1621.18	1621.18	3.43	
लिंग x पर्यावरण	1	1413.26	1413.26	2.98	.01
		द्वितीय अन्र्तक्रियात्मक प्रभाव			
प्रशासन x लिंग x पर्यावरण	1	2048.18	2048.18	4.16	
त्रुटि	183	491.78	491.78		
योग	190				

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि मुख्य प्रभाव के अन्तर्गत विद्यालय के छात्रों की उच्च तथा निम्न समायोजन पर्यावरण पर प्रसरण 2.52 प्राप्त हुआ है। जिससे इसके आधार पर शून्य परिकल्पना स्थापित होती है। मुख्य प्रभाव के अन्र्तगत ही छात्र व छात्राओं के उच्च व निम्न मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रसरण अनुपात 2.23 है जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना स्थापित हो जाता है। मुख्य प्रभाव में ही

उच्च तथा निम्न मनोसामाजिक पर्यावरण के शैक्षिक उपलब्धि का प्रसरण अनुपात 3.89 है जिसके लिये बनायी गयी शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि उच्च तथा निम्न मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण में अंतर पाया जाता है। जिसके सम्भवतः कारण विद्यालयों के संसाधन तथा अनुशासन है।

प्रथम अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव के अर्न्तगत् प्रशासन व लिंग के लिये प्रसरण अनुपात 2.29 है, जबकि प्रशासन व पर्यावरण के लिये प्रसरण अनुपात 3.29 है तथा लिंग व पर्यावरण के लिये प्रसरण अनुपात 2.87 है जिनके आधार पर सभी अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव के लिये शून्य परिकल्पना स्थापित हो जाती है, और स्पष्ट हो जाता है की शैक्षिक उपलब्धि के लिये दोनों समूह अर्न्तक्रियात्मक पर समानता रखते है ं।

द्वितीय अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव के अर्न्तगत (प्रशासन x लिंग x पर्यावरण) का प्रसरण अनुपात 4.16 है जो कि (1,183) के .05 सार्थकता स्तर 3.89 से अधिक है जिसके आधार पर द्वितीय अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव के लिये बनायी गयी शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण का प्रभाव विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम था कि उच्च व निम्न मनोसामाजिक विद्यालयी पर्यावरण के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर होता है और छात्राएं अधिक प्रभावित होती हैं ।

उपसंहार

वर्तमान में विभिन्न प्रकार के विद्यालय मौजूद है, जिनका प्रशासकीय नियन्त्रण विभिन्न संगठनों द्वारा किया जाता है। विद्यालयों में नियम तो शिक्षा विभाग के लागू होते है किन्तु शैक्षिक प्रशासन पद्धति भिन्न–भिन्न होती है। विद्यालयों में प्रशासन का दायित्व प्राचार्य तथा शैक्षिक अधिकारियों पर होता है। एक ऐसे विद्यालय जो विभिन्न शिक्षण समितियों द्वारा संचालित होते हैं। विभिन्न शिक्षण समितियों द्वारा संचालित विद्यालय तथा एक ही संगठन या शिक्षण समिति द्वारा संचालित विद्यालयों की प्रशासन पद्धति अलग–अलग है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाएगा की भिन्न–भिन्न प्रशासन पद्धति से प्रशासिक विद्यालयों के मनोसामाजिक विद्यालयीन वातावरण तथा विद्यार्थियों के शैक्षिणिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध है या नहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एडेल, एम. ए. (2002)–स्ट्रेटजस फार इम्प्रूविंग फार एकेडमिक परफॉर्मेन्स इन एडोलसेन्स, मैड्रिट पाइरामाइड.
2. कबेरो, आर. एण्ड एम. सी मारेनो (1990) –सोशल रिलेशनसिप्स : फैमिली स्कूल क्लासमेट्स स्कूल इयर्स.
3. कैप्लान, एस. एण्ड अदर्स (2002) –सोशियोमाटिशनल फैक्टर्स कान्ट्रीब्यूटिंग टू एडजस्टमेन्ट एमांग अर्ली इन्टररेन्स कॉलेज स्टूडेन्टस, गिफ्टेड चाइल्ड क्वारटर्ली 46(2) 124–134.
4. गोन्जालेज, जे. ए. एट एल (2002) –ए स्ट्रक्चरल एक्वेशन मॉडल ऑफ पैरेन्ट्स इन्वॉल्वमेन्ट मोटिवेशनल दण्ड एप्टिडूनिअल कैरेक्टरिटिसरिक्स एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट जर्नल ऑफ एक्सपेरीमेन्टल एजूकेशन, 70(3),257–287
5. गुप्ता, डॉ. मधुबाला– ''बालक के विकास में परिवार व विद्यालय की भूमिका'' लैब सहायक, गृह विज्ञान (रा. मा. दे. महिला, महाविद्यालय विजनौर)
6. जोशी (1984)– कुमायूँ क्षेत्र के पर्वतीय भाग में रहने वाले नवयुवकों में वहाँ के स्कूल एवं गृह पर्यावरण के सन्दर्भ में उनके आत्मपरिचय और उनके मूल्यों का अध्ययन
7. दीक्षित, आर. एम. (1971) – विद्यालयीन वातावरण मानको ं का सत्यापन, एम. बी. बुच द्वारा सम्पादित सेकेन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन सोसाइटी एण्ड एजुकेशनल रिसर्च इन डेवलपमेंट.
8. दीपशिखा (2012) –''इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की प्रशासन पद्धति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बंध'' लघुशोध–प्रबन्ध, शिक्षा संकाय सम्बद्व वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय जौनपुर.
9. नायेल, जे. फुलाना (2005) – एन इन्वस्टीगेशन इन्टू स्कूल सक्सेज एण्ड फेलर फाल दी पर्सपेक्टिव ऑफ रिस्क फैक्टर्सः इम्पलीकेशन्स ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड प्रॅक्टिस, थीमिस, यूनिवर्सिटेट डे गिरोना डिपार्टमेन्ट डे वेडागाजिया
10. पाधी, जे.(1989)–''होम इन्वारोनमेन्ट, पैरेन्टस चाइल्ड रिलेशनसिप एण्ड चिल्ड्रेन्स कम्पीटेन्स ड्यूरिंग एडोलसेन्श'' एम. बी. बुच : फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एन. सी. ई. आर. टी. नयी दिल्ली, पृ. 1018
11. भार्गव (1986)– स्कूल एवं गृह पर्यावरण के द्वारा बच्चों मे स्थूल और वाह्याडम्बर पूर्ण क्रियात्मक स्थितियों में युक्त नैतिक दृष्टि को पूर्ण क्रियात्मक स्थितियों से युक्त नैतिक दृष्टि का विकास, शोधप्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.
12. मेहरा, एम. (1980) – विद्यालयी बच्चों पर पारिवारिक या गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, कटवरिया सराय नई दिल्ली.
13. मिश्रा, करुणा शंकर (1980) – स्कूल इनवायरमेंट इनवेन्ट्री, अंकुर साइकोलाइजिकल एजेंसी लखनऊ.

14. यादव, शंकर (2008) – सामाजिक परिवेश व विद्यालयी परिवेश में सम्बंध शोधपत्र परिप्रेक्ष्यनीय.
15. यादव, शिवकुमार (2016) –'विद्यालयी पर्यावरण व शैक्षिक उपलब्धि' शोध पत्र NDER vol.2 जौनपुर
16. श्रीवास्तव मंयक कुमार (2002) – उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि पर विद्यालयीन वातावरण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन.
17. सिंह, सुनील (2002) – 'विद्यालयी पर्यावरण तथा अधिगम' शोध पत्र रिसर्च जर्नल्स रिपल्स वाल.3 छत्तीसगढ़.